

सनि ∞ फनि  
पवत्त्रि स्र्थानों पर प्रदर्शन

कश्र्मीर, उत्तराखंड, दल्लिी

© VestAndPage 2011  
Verena Stenke & Andrea Pagnes  
in coproduction with Sarai CSDS, New Dehli

Text: Andrea Pagnes  
Translation: Rakesh Kumar Singh

# सनि ∞ फनि

रचनात्मक वचिारों के महासागर में  
और सृजन के तमाम पहलु  
हमेशा मेरे जहन में मौजूद रहे हैं  
अगर नहीं तो कम से कम  
अदृश्य तौर पर ही सही  
बस इसे जगाने वाले किसी दूत की जरूरत है  
जो ये याद दल्लिए कदिल्लोजान से सहयोग करने के रासूते हैं,  
जहां वनस्पततयिों, पशुओं, या फरि इस जटलि दुनयिा को एकजुट कयिा जा सकता

## चैप्टर 1

### भूखमरी गली

मैंने कृष्ण को कैद करने की कोशिश की  
मेरे सपने अब और किसी चीज के बारे में नहीं बताते  
वे खुद को सवाल के तौर पर पेश करते हैं  
और सवाल छवियों के रूप में  
क्या होगा अगर ये छवियाँ स्मृतियों की निर्माण-प्रक्रिया के महज़ अंश ही हुए  
अंततः मैं अवचेतन में दाखल हो जाऊंगा  
यह समय और नीयत के वरिधाभास सा लगता है  
जैसे अपने पूर्वजों को मारने के लिए मैं बीते समय में लौट रहा हूँ  
और आज की अपनी पहचान और खुदी को नकार रहा हूँ  
वभिन्न प्रकार की अदृश्यताएं:  
कोई वहां से क्या कहता है, और मैं उसे किस तरह सुनता हूँ ?  
जहां भी मैं जाता हूँ, देखता हूँ लोग भागे जा रहे हैं  
अपनी जिंदगी के लिए  
ये लोग कौन सी भाषा बोलते हैं?  
कौन सा गीत गाते हैं?  
किस तहखाने की भीड़ बने हैं ये?  
उनकी आत्मा में कौन से विचार और खयाल उमड़-धुमड़ रहे हैं?  
कल्पना ही नहीं की कुछ, तो फिर पैदा ही क्या किया जा सकता है?  
हिसा से बचने के लिए हम जाएं तो जाएं कहां?  
हमारे देश अगर दूसरों के साथ केवल संभावति हिसा की खरीद-फरोख्त करते रहे  
तो फिर हम जाएंगे कहां?  
बंद दरवाजों वाली वो जगह है कहां?  
कहां लोग केवल खुदा को याद कर रहे हैं?  
कहां निर्दोष लोग फंसे पड़े हैं?  
कहां कोई मेरी हफ़िज़त करने आ रहा है?  
कहां कोई नौजवान खून के साए में हैं और लोग उनके लिए दुआ कर रहे हैं?  
जहां लोगों को खानाबदोश कहा जा रहा है  
कहां है वो जगह?  
घर?

व्यवस्था में दरार है फिर भी  
भय से आजादी वाली आधुनिकता का महान वादा अब मलवों में दबा पड़ा है  
भय एक माध्यम न कि संदेश  
भय एक आनुशंगिक प्रभाव, प्रगतिकी शक्ति  
भय यानी पनाह, घर, शैली, परंपरा, पात्र.  
भय, एक और मौका, इकाइयों को दर्ज करने का, जो खेलता है और जीतता है  
दुलार और आलगिन

# सनि ∞ फनि

भय संभालता है और भय ही हलियाता है.

जहां कसिी और का भय समाप्त होता है वहां से मेरा भय शुरू होता है.

इसे एक आकार दो, एक प्रतीक दो, एक घेरा दो, एक चमकीला धार दो.

संकेत, पंक्ति, प्रतीक, स्याह-सफेद और रंगीन नगिाह

आवाजें दीवार पर चपिकी हुई हैं जो जीवंतता प्रदान करती हैं, और देती हैं प्रमाण

रौशनी, उससे भी ज्यादा परिवर्तित होती हैं जिसके लिए उसे खींचा गया था.

क्रम के सहारे भय, चारद्वारियों से भी अपरभाषित हैं

भौतिक, क्लान्त, उकेरा हुआ, नक्काशीदार, वास्तविक या काल्पनिक स्वरूप

हवाओं को सूघते हुए मैंने कोशिश की गुफाओं को पहचानने की,

वे गड्ढे और कोने

जहां भय वशिराम कर रहा था

मैंने अपनी आंखों के लिए धीमे इंद्रधनुष की कामना की.

‘मैं यहां हूँ’ कसिम का नक्शा कहां गुम हो गया?

जब मैं पैदा हुआ था तब तो यह कहीं नहीं था.

न होने के सुख को एक वचित्रता के तौर पर देखा गया,

कुछ जाने-बूझे के बीच आसानी से संखलन ...

मैं कहीं बढना नहीं चाहता, लेकिन देखो हमने क्या पाया,

पेड़ों के लिए दय्यासलाइयां, और खुले हुए नाले.

बेथेलेहम, गाज़ा, कश्मीर, लहासा ... एक दूसरे की पहरेदारी करती, बहुत सी जगहें

## अर्ध्याय 2

### एकरूपी गली

तेज़ी से होती इस अदृश्यता में बहुत सी चीज़ों पर खतरा है:

क्या मैं भी क्षणभंगुर हूँ?

सवाल रुकते नहीं.

जांच-पड़ताल के वजूद की अपनी वज़हे हैं .

रोज-ब-रोज के छोटे-छोटे रहस्यों को समझना,

न कि किसी पवत्रि उतसुकता के लिए सुध-बुघ खो देना

ब्रह्मांड के अचल नयिम नश्चिति तौर से बेहद प्रभावी सीख दे सकते हैं,

जसि पर भरोसा है, हम उसे ही पतत्रि मानते हैं.

मैं जैसे बहुत से मसखरों से मलि चुका हूँ जनिहोंने नपिण होने की खूब कोशिशें की;

और उन शकिषकों से जनिहोंने सर्फि और सर्फि दूसरों में गलतियां ढूढना सखिया

मालूम नहीं किये सब एक ही हैं,

पूरणता जीवन की किसी एक अवस्था या स्थतिमें नहिति नहीं होती,

और सुंदरता लाभ सदिधिका कोई रास्ता नहीं हो सकता या न ही किसी बेहतरी का;

यह केवल अपनी ही दशिा में बढता जाता है.

मैं वो नहीं हूँ जो आप सोच रहे हैं

न मैं पूरब हूँ और न पश्चमि

मैं तो बस कहीं और हूँ.

मेरे दमिाग में हमेशा एक ही सवाल होता है, जो गलत होता है.

तमाम पवत्रि इबारतें गहरे कुंड के मानदि हैं

कतिने वयापक हैं वे और कतिने सरल?

दोसती, एक पवत्रि बंधन, आपदाओं से ज्यादा पवत्रि बनी है.

होना मात्र वरदान है. जबकि जीवन पवत्रि.

जदिगी ढेर सारे कायदे-कानूनों वाला एक खेल है जसिमें कोई रेफरी नहीं होता.

छोटी सी चाहत, और फरि उसके लिए ढेर सारी गंदी कारगुजारियां,

फरि थोड़ी जीत और खूब सारी हार.

तमाम चीज़ों पर पर्दा पडा है,

संपर्षट, अशलील, नाजुक और सुगम,

शर्म या आरोप के बनिा, तुक या तर्क के बनिा,

मुर्दों पर, यतीमों पर, या बेघरों पर इसका क्या असर पडता है,

पवत्रिता के नाम पर वधिंस का पागल खेल चालू है,

आजादी, लोकतंत्र और वशिंवायन का?

अपने वयक्तगित पतन को याद करना

मेरे मन में एक पवत्रि दुःख पैदा करता होता है.

अब चीज़ों का वनिास,

अपने जीवन में उस वयक्तको पाना है

# सनि ∞ फनि

जसिके साथ में रह सकूं,  
सपने बढते हैं ताक़िप्रक्रिया आगे बढे  
मैने पीने से चूक गया:  
सोचा मयखाने सचमूच पाक जगहें होती हैं.

खरीदा हुआ उपहार होता है  
संवामर्तिय साझा नहीं होता  
फेंका हुआ हर जगह पाया जाता है  
'साक्ष्य' क्य़ा है?  
खुले दरवाज़े पर टंगे चथिडे पर्दे.  
गहराती रातें.  
टमिटमिने वाले बल्य.  
मैं अंडे के अंदर के सफेद की तरह छलकने को तैयार हूं,  
मुझे हलके ढंग से छूने की जरूरत है,  
मेरे कोर कोमलता से सपाट हो चुके हैं,  
शायद मैं रो पडूं और अर्थहीन बन जाऊं.  
जरूरी ये है कभिवर्षिय पूरवजों की तरह दखिने लगे,  
जैसे-जैसे सूर्यास्त फैलता जाता है क्षतिजि का नास्तिय उसे घेरने लगता है  
पानी में आया सूक्ष्म बदलाव समय पथ को चन्हिति करता है,  
या फरि समयहीनता के प्रभाव को उर्तपन्न करता है:  
कभी-कभी नलके से पानी गरिना बंद हो जाता है.

आप अपने जीवन के उस क्षण में पहुंचते हैं जब,  
आपके जानने वाले लोगों में से  
मरे हुआ की तादाद जदि लोगों से ज़्यादा हो जाती है.  
तब मन और नए चेहरों तथा और भंगमिओं को संधीकारने से इंकार कर देता है.  
हर वो नया चेहरा जो आप देखते हैं, उस पर पुराने संवुपों के छाप दखिलाई पडते हैं,  
और फरि सबसे योग्य नकाब आपको मलि जाता है.  
ये उस व्यक्तिके बारे में नहीं है जनिका जन्दि न होना कसिी और की संमृतिमें खलता है.  
और यही वो है जसि कोई प्रसारति करता है, सुनाता है, याद करता है और साझा करता है,  
हर व्यक्तियह मानता है कविो गुप्त खजाने का मालकि है,  
और यह सामान्यता के भ्रम को बनाए रखने के लिए.  
ऐसी कोई व्यक्तगित या वैश्वकि समस्य़ा नहीं  
मेरे हसिब से जसिका हल मुमकनि न हो कसिी न कसिी परधिमें.  
हर चीज़ मुमकनि है कसिी और चीज़ की वजह से.  
हर चीज़ कसिी और चीज़ की रददोबदल है.  
भूत वर्तमान में बुलाया गया है.  
कसिी से पूछना कविो इस जगह क्य़ों आए हैं दरअसल ये पूछना हुआ कठिस जगह को उर्नहोने क्य़ों छोडा है

सारी चीज़ें दरक रही हैं  
मैं फरि भी खुद को संबंधों के परप्रेक्ष्य में ही परभिषति कर रही हूं

## सनि ∞ फनि

फरि भी इतनी बंटी हुई, और अंदर से तो और भी ज़्यादा बखिरी हुई.

पूरणता को लेकर अंध-समझ :

मैं खुद से कुछ छपिने के लिए बदलती हूँ

मैं उस अवस्था में आ चुकी हूँ जहाँ मैं लोगों को देखती हूँ और कहती हूँ ....

वे हैं, क्योंकि उन्होंने इस या उस स्थितिसे खुद को काटे रखने का चयन किया है.

लोग खुद को औरों से अलग कर या खुद में सटिम कर संतुलति दखिते हैं

कभी-कभी मैं लोगों से मलिती हूँ, और पाती हूँ कविे चारों तरफ से दरके हुए हैं

वे दूटे हुए हैं,

फरि मुझे ऐसा लगता है कि

उन्होंने किसी चीज़ के प्रतखुद को खुला छोडा हुआ है.

बहुत बार मैं इस नतीजे पर पहुंची कि मैं गलत हूँ

हर वयक्ति चाहता है कि सामने वाला उनके प्रतउदार हो.

मैं चाहती हूँ कि कोई एक वयक्ति होता जिसके साथ मैं बात करती,

जो मुझे समझ पाए,

मेरे प्रतउदार हो.

यही मेरी असली सोच है.

## अर्ध्याय 3

### रेलकिास लेन

यह अब भी पनपता है और अंकुरति होता है,  
कबरगाह, खेत, तालाब, पहाड और समुद्र में मलिने तक नदयिां.  
संगीत. कवति.

मुमकनि है सवेरा होगा (या लोट ही जाए)  
अनमोल संसाधनों के लिए,  
बनने वाले संसाधनों के लिए.

खून न बहाओ, अभी मौत न अख्तियार करो, न चलिाओ,  
हमारा घर अब नहीं रहेगा सुदूर, है वो कठनि जन्त.  
रासंति में तरंगे उठती रहती हैं, फरि भी वे इंतजार करते हैं  
लेकनि कसिी एक तरंग को भी यह मालूम नहीं होता.

में जदिदी कसिम की हूं.  
ग्रह के चारों ओर घूमती हूं, अपने नशान छोडती हूं, कुछ घावों को चूमती हूं.  
सूरज उगने के साथ तारे साथ-साथ चलने लगते हैं,  
कसिसे वे चपिट रहे हैं, उसे जाने बनिा ही  
कुछ अदृश्य हो जाते हैं.  
अगर लंबे समय के बाद कोई संभलता भी है  
तब तक फफूदी लग चुकी होती है, और दखिती चमक भरी है.  
में इसलिए चारों ओर नही भाग रही किये खो जाए  
अगर मुझे कोई परतिाकृत तारा मलि गया  
तो में उसे अपने सफेद हाथों में लूंगी, उन्हें नहीं पता है कउन्होंने क्या ले रखा है.  
मेंने तो इसे ले रखा है, और अपनी छाती से चपिका रखा है.  
पसलियों और दलि की दीवारों के बीचोंबीच,  
जहां ये गर्म रह सकें, लेकनि में इसे आंक नहीं सकती.

हर चीज का वजूद है और कसिी चीज का नहीं.  
प्रतयेक में से कुछ भी नहीं.  
कोई एक था और कोई एक नहीं भी.  
अब यह कथन बहुत अलग है.  
द्वैतवाद के रूप में प्रस्तावति कयिा गया कोई वषिय  
मतलब : 'कोई है और कोई नहीं'.  
कसिी अर्चुछे का अंश या फरि कुछ भी नहीं.  
अब तक कोई भी नहीं पहुंचा, कोई भाग नहीं ले रहा है.  
जो नहीं था, उसे अब होना है. लेकनि शायद वो बाद में आए.  
इसलिए, यहां दो हैं,  
एक जोडा, एक बातचीत या फरि संवाद:  
कोई एक नहीं और न ही इसकी कमी,

# सनि ∞ फनि

बल्कजिो है उसका एक प्रतरूप,  
प्रतरूप, शायद मृत्यु, वलिपूत हो जाने का जोखमि?  
एक ही समय में जो था और जो नहीं था?

रौशनी और अंधेरे बादलों की तरह मेरे पूरे शरीर में नरितरता प्रवाहति हो रही है.  
कुछ हो रहा है मुझे पर  
जीवन ने मुझे वसिंभृत नहीं कयिा,  
अपने हाथों में इसने मुझे थामा हुआ है.  
यह मुझे गरिने नहीं देगा.  
जैसे बलिंली की नौ जनिंदगयिां होती हैं, मुझे उम्मीद है मेरी भी वैसी ही है.  
ऐसा हो नहीं सकता?

प्रतकिरयिसाँवरूप कयिा गया नकार नए भय पैदा कर सकता है.  
पछिले राखों से पैदा हुआ, वभिन्नता का भय सँवीकृति का भया होता है .  
भय कसिी और आत्मा का रूप ग्रहण करता है जो परविरतन की ओर ले जाता है.

वधिंस, पूरी तरह प्रतरिध का मामला है.  
पीडा पर वजिय हासलि करता है, बहुत सी जदिगयिों को बढाता है.  
उन्हें देखो, महसूस करो. मैं करता हूँ.  
कसिी होनी के इंतजार में, पत्थर अब भी खडे हैं,  
वे अस्ततिव की जिदिद पर डटे हुए हैं.

रकिंत का अस्ततिव, दुनयिा के अवशेष, दुनयिा की सौन्दर्यपरक छवयिों के अवशेष हैं,  
सार्वजनकि रूप से ज्ञात भौतिक नयिमों के अनुरूप नहीं  
बल्किसद्भाव की खोज और ऐन्दरयि अनुभूतयिों के बीच संतुलन के रूप में.  
यह पूरणता को अर्थ देता है,  
और अनाय सँथान का सृजन कर सकता है,  
हालांकि निवीनीकरण की संभावनाओं से लैस,  
संभावति अनुकूलन के प्रायोगकि परिणामों:  
जगहों में हुए फेरबदल के जवाब और हल पाने की इच्छा को रक्षति रखते हैं.

पवतिरता, पाप और आजादी,  
सँवीकृत न कएि गए वकिसपरक सँथानों को फलने-फूलने की जगह दे सकते हैं.  
अनयित्तरति पर्यावरणों और पर्यावासों के जनक,  
संदग्िंध भूभागों में, मुमकनि है किडर के मारे नाचने लगे  
समकालीन पहचान के उद्दातीकरण में तब्दील हो जाएं.

## अर्ध्याय 4

### इरफिटगि लेन

में उस काल-कोठरी में पहुंच चुका हूं जो सबसे बुनियादी तत्त्व है  
- जहां एक-दूसरे से वलिक्षण रूप से जुड़े भूत और वर्तमान का  
भंजन हो रहा है.

काल कोठरी से प्रस्फुटति हो रहे अणु

ये सूचना नहीं देते कि काल कोठरी में क्या गरी है.

टनों पंख उड़ा दो, या ईंटें फेंक दो,

काल कोठरी से निकलने वाले अणु वैसे के वैसे ही रहेंगे.

जो नष्ट हो गया उसका कोई नशान नहीं है.

एक बार जब काल कोठरी अदृश्य हो जाएगी,

इसकी अन्तर्वस्तु से जुड़े तमाम ज्ञान और तमाम सूचनाओं के लिए तुम कहां जाओगे?

संपूर्ण का मतलब उसके अंशों का जोड़ नहीं है

उद्गम और गंतव्य धुंधले होते हैं.

वे फंदे, चक्र और सांचे बन गए हैं.

उनका अन्वेषण बुने हुए अभिप्राय के नथिरने जैसा है.

उन्हें अलग करने की ज़रूरत है

भूत और वर्तमान को एक साथ संभालना

उसके मार्फत भवष्य के रसिाव के लिए ज़रूरी है.

ये धरती इत्र और पेशाब के बीच भेद नहीं करती.

अपमानति और धक्कारे हुआओं के बीच भी नहीं

यह सबको समाहति करने की कोशिश करती है, सबको रोपने की कोशिश करती है.

अब मैं सेचता हूं, मैं जानता हूं कि सुंदर चीज़ें कठनि क्यों होती हैं.

दुनियावी हलचलों के बारे में जानना हमारे शरीर को चौकन्ना करता है.

मेरी उंगलियां इटली की तरफ घूमती हैं,

मेरे पैर चीन की दीवार की तरफ टहलते हैं,

मेरा सरि मेगेलन हवा में सैर करते हैं,

मेरा मुंह मैक्सिको का स्वाद लेता है,

मेरे कान न्यूयॉर्क में सुनते हैं,

मेरे आंख भारत को देखते हैं,

मैं इराक के बारे में सोचता हूं,

मेरा दिलि जापान में भ्रमण करता है,

मैं ज़रूरत से ज़्यादा खचिा हुआ महसूस करता हूं,

ये मानसिक और भावनात्मक कलाबाजियां,

शायद इस टूट-फूट के साथ न्याय करने की आजमाइश हों

मेरी भौतिक योग्यताओं को बढ़ाकर.

लेकनि जर्मनी को ढोते हुए मैंने अपने कंधे को जख्मी कर लिया है.

क्या वैशचिक शरीर के लिए कोई प्रशिक्षण हो सकता है?

# सनि ∞ फनि

कहां है वो प्रशिक्षक?  
और क्वा मैं खुद को इंकार कर सकता हूं?  
क्वा मेरे पास सीमाएं हैं ?  
क्वा मैं एक देश हूं?  
क्वा मैं कोई जगह हूं?

मेरा हरदय मुझे याद दिलाता है ...  
मैं पानी हूं जो शरीर बन गया है,  
और धरती, आग, समय प्रासंगिक होते गए.  
मैं हूं आग, गहराती हवा.  
समय का बहता पानी, स्थायी नहीं हूं मैं  
मैं पानी हूं जो शरीर बन गया है, और तब धरती इसे पी जाएगी.  
आग हूं मैं, एक सघन गहराता बादल धैर्यहीन.  
धरती पर बहने वाली हवा हूं मैं, और समुंदर पर फैले कब्रगाह.  
मैं उड़ने वाला समय हूं,  
जबकि मेरी मृत्यु मेरे साथ चलती है उल्टी दिशा में घूमने वाली घड़ियों की तरह.

आधी दुनिया के पार करुणा और क्रोध अपने खेल को प्यार करते हैं  
एक सुबह मैं जगता हूं,  
मेरे तन्तु लगभग पूरी तरह ठंडे पड़े हैं,  
मेरी आवाज पूरी तरह समाप्त हो चुकी है.  
कुछ भी नहीं बचा है मेरे पास कहने के लिए  
वचारों और शब्दों की कमी पड़ गयी है,  
मेरे गले को भरने के लिए केवल कुछ थकाउ ध्वनियां बची हैं.  
संवेदनाओं और हर्ष की भारी कमी हो गयी है मुझमें  
सबकुछ है मेरे आपसास लेकिन अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं.

मैंने बहुत सी चीजों का वादा किया और बहुत सी चीजों की कोशिशें कीं  
अपनी रोशन प्रज्वलति रखने के लिए, जो कुछ भी था मेरे पास, सबका इस्तेमाल किया.  
लेकिन नहीं, कुछ भी नहीं बचा था जलाने के लिए,  
गरमी बनाए रखने के लिए दलि भी नहीं बचा था.  
अगले दनि मैं वापस घर आया,  
शरीर खंडित हो चुकी थी.  
मैंने कभी जनि तमाम चीजों के सपने संजोए थे, बस वे मेरी जहिया को पोषति कर रहे थे.  
हां, मेरा शरीर कहता है :  
अगर मैं वविक को भवनाओं से छलता हूं, तो मैं भ्रम पैदा करता हूं.  
अगर एक शरीर बोलता है, तो दो शरीर बातें करते हैं:  
वे करुणा के चलते इतने वास्तविकि दखिते हैं.  
धीमे बदलाव अलग कर सकते हैं,  
लेकिन दूरियों को कम करना ऐसा है मानो चीजों के माध्यम से देख रहे हों.  
जो भी मैं करता हूं, क्वा वे मुझे भूलने में मदद करते हैं?

## अर्ध्याय 5

### रेवरी लेन

तमाम समझदारी इन पर टकी है:

हरदय त्वचा को आकर्षति करता है, यह हमारे लिए आनंद का वषिय होना चाहिए,  
इमानदारी से खड़ा हो जाना,

यह जानना कि हमारी अस्थियां मांस के अंदर आसानी से वचारण कर रही हैं.

मैंने खुद को मारने की कोशिश की, असफल रहा, खुद को अंधा कर लिया,  
और अब मैं उस खुद को रोकने वाला बन गया हूं जो खुद को मारना चाह रहा था.

दूसरा सबसे अच्छा कुछ भी हो, लेकिन रहेगा दूसरा सबसे अच्छा ही

मैं उस ओर देखता हूं जो बांटता है और अलग करता है,

मैं उस ओर नहीं देखता जो दोनों में सामान्य है.

मैं दूसरों को राजी करने की कोशिश करता हूं,

और अंत में खुद को समझाता पाता हूं,

किसी तरह की श्रेष्ठता के दृढ़ विश्वास से प्ररति

प्रत्येक चीज में अतिसिरलीकरण है,

और ज्ञादातर में लचीलेपन का खोफ

जब तक मुझे जरूरत नहीं होती,

मैं सभी चीजों के अतिरिक्त कोई भी चीज नहीं मांगता

क्या आप मेरे हाथ देख रहे हैं?

इन हाथों से मैं किसी को पकड़ सकती हूं, अपने करीबियों को प्यार कर सकती हूं,  
किसी को मार सकती हूं, नुकसान पहुंचा सकती हूं.

मैं सृजन और वधिवंस कर सकती हूं, मला सकती हूं और जुदा कर सकती हूं.

मुझे कहा गया कि अगर मैं अपने हाथ उठाऊं तो मैं खुदा तक पहुंच सकती हूं

अगर मैं इन्हें फैलाऊं तो मैं पूरी दुनिया को अपना बना सकती हूं,

यहां से वहां, इस जगह से उस जगह, यात्रा करते हुए, घूमते हुए,

जुड़ने की कोशिश करती हूं.

चरिस्थयी गैरमौजूदगी से मुझे कोई दक्कित नहीं है.

तब मैं 'सामान्य' होती हूं :

यह मेरी उत्तरजीवति की शर्त है;

अगर मैं इसे नहीं भूली तो मुझे मृत्यु का वरण कर लेना चाहिए

भय संदग्धिता पर एकाधिकार जमा कर सफल होता है;

यह समय और परस्थिति को थाहने की क्षमता के तहत ही यह साया गढता है.

अगर मैं खुद को इसके बारे में लगातार याद दिलाती रहूं,

तो मेरे पास भय की कोई वजह नहीं बचेगी,

सोचने के लिए न कोई वचार. रने के लिए न कोई आंसू.

सब नचिड़ा हुआ सूखा.

## सनि ∞ फनि

मौत से खुश.

मैं कांच की प्याली के द्वारा अपनी छविनिहिरती हूँ.

यह भृकुटियों के बीच चक्राकर प्रकट होता है.

क्या इसी को 'पवतिर/दैवी' कहते हैं?

मूर्च्छति सम्मरण में धुंधलाते हुए को पुनः एकत्र करने के लिए

मुझे अपना आचरण ठीक रखना होगा

जबकि बहुत सी छवियां बीते समयों की लत में स्थापति हो चुकी हैं.

## अर्ध्याय 6

### जक्चर लेन

समय के बारे में जो सबसे दर्दनाक बात है वो ये कि कुछ भी वनिशकारी नहीं होता.  
यह सब गलत कुरूप नाखुश और नीरस,  
और कुछ भी त्रासद नहीं,  
किसी चीज़ या व्यक्तिको बदलने वाला कोई क्षण नहीं होता.  
नज़ी आपदाओं का लैंडस्केप दिखाती है  
समय-समय पर भावुक बज़िली चमकती है,  
और, तब हम बस नाचने-गाने लगते हैं.

मैं अब भी हर काले में सफेद के अवशेष पहचान सकती हूँ,  
हर सफेद में थोड़ा-थोड़ा स्लेटीपन  
और गँहराई में धंसा हरापन,  
एक दूसरे के लिए अलंघनीय.  
हालांकि, जो कुछ भी हुआ, उनके बावजूद,  
मेरे आने वाले कल में बीते हुए कल का कुछ भी नहीं है.  
जो आने वाले कल को बीते हुए कल में दूँढने की कोशिश करते हैं  
वे बुरी तरह दगिभ्रमति हैं.  
यह नदी अपने आप को दोहराएगी नहीं.  
यह बहती चली जाएगी.  
कुछ था और कुछ नहीं था  
वही पुरानी कहानियाँ और जगहें ,  
केवल वभिन्न परस्थितियों या चरणों के कारण  
कोई आकार बदल भी सकता है.  
वास्तविकि जीवन की दुवधिएं और परस्थितियाँ  
'इसे सही करो' या 'गलत करो' के सवाल नहीं हैं.  
ये तो शांतिकी खोज की कुछ अभिव्यक्तियाँ हैं.  
और फरि भी, ये सारी जटितिएं हैं.  
क्या रहेगा और क्या बच जाएगा?  
परेशानियों पर भरोसा करके, अपने संदेहों को उकेर के शायद खुद में उलझ जाऊं  
या फरि वापस निर्माण में जुट जाऊं.

## अध्याय 7

### बॉलेंड लेन

जो यहां है, उसे हम हर जगह तलाश रहे हैं,  
जो यहां नहीं है, वो कहीं और भी नहीं है.

एक वसंतार बनता जा रहा रहा है.  
वहां जो स्थान था, वो बढा है.  
हम एक भीड़ से नकिल रहे हैं जैसे ही जैसे कोई धागा सूई से गुजरता है.  
अगली बार के लिए अंतहीन इंतजार की तरह, यह स्थरि खडा रहने जैसा है,  
वशिराम के लिए एक छाया की अंतरंग चाहत को पोषने की कोशशि करता हुआ,  
या फरि लंबा समय बीत जाने के बाद भी वापसी की इच्छा.

मैं बहुत सी वास्तवकिताओं को जीता हूं,  
लेकनि इनमें से केवल एक ही मेरे जीवन का आलंब है.  
वो क्या है जो मेरी 'खुदी' का नरिमाण करता है?  
अलग-अलग तारीखों की रौशनी म.  
जब मैं एक तरीके से खुद को देखते हुए सहज हो लेता हूं,  
फरि कोई चीज़ मुझे यह याद दलिती है कि मैं कहां का बाशदि हूं,  
मेरे शरीर पर कौन-कौन से नशान हैं,  
अब भी मेरा चेहरा भीड़ और बादलों के बीच छुपा हुआ है,  
या फरि मोहर के नीचे, पहले के समय से इतर, अलग रंग की रोशनाई के साथ.

खुली जगहों को लेकर मैं बहुत तेज़ी से बीते समयों में उतर जाती हूं  
उन 'अस्थायी' संरचनाओं से पहले का समय जो कभी नहीं छूटता.  
ये सब मुझे सुरक्षति और नरिभय बनाने के लिए.  
कसि चीज़ से सुरक्षति?  
खुद मैं, मेरा कमज़ोर पक्ष, समाज ?  
मेरे संबंध, मेरे दुःसँवर्ण, वचिर या मेरा भरोसा?  
मेरे अधिकार, मेरे दोस्त, मेरे दुश्मन? मेरे सपने?

मुझमें भरोसा रखो.  
अपनी आंखें बंद रखो ओर मुझ पर भरोसा करो.  
यह जानते हुए कि मैं आसपास हूं तुम सुरक्षति और गहरी नींद सो सकते हो,  
उतर सकते हो शांत मांस में.  
तैर सकते हो चमकीली धुंध में.  
धीरे-धीरे और नश्चिती तौर  
पे तुम्हारी इंद्रियां प्रतरोध करना बंद कर देंगी.

## नकिस

अगर यह तुम्हारी अभलिषा है  
कर्मि अब और न बोलूं  
और मेरी आवाज़ स्थरि हो जाए जैसी पहले थी,  
में नहीं बोलूंगी  
में तब तक सब मानूंगी जब तक मेरे लिए कोई बोले नहीं.  
अगर यह तुम्हारी अभलिषा है.